ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 6.03

Volume 12 Issue 9, September 2025

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects

e-ISJN: A4372-3088

p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study

Published By: SK Publisher (www.skpublisher.com)

A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access Multidisciplinary & Multilingual International Journal - Included in the International Serial Directories

स्वामी विवेकानंद की महिलाओं के प्रति विचारधारा

डॉ. किरन सरोहा

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,

शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा ।

DOI: https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i9.6

शोधालेख-सारः आधुनिक युग में महिला सशक्तीकरण आंदोलन जोरों पर है फिर भी स्त्री कुप्रथाओं एवम भेदभाव का शिकार हो रही है। बहुत सारे बंधन स्त्री को जकड़े हुए है। उसका सशक्तिकरण थोड़ा सा पथभ्रष्ट भी हुआ है। ऐसे में भारतीय महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके विचारों का अवलोकन ज़रूरी हो जाता है। इन्ही महापुरुषों की कड़ी में एक नाम स्वामी विवेकानंद जी का है। इनके महिलाओं के लिए विचार अत्यंत आधुनिक थे। ये स्त्री पुरुष समानता के पक्षधर थे। स्त्रियों को शिक्षा दिये जाने व स्वतंत्रता दिए जाने को बहुत महत्व देते थे। वह महिलाओं से संबंधित कुरीतियो के ख़िलाफ़ थे। उन्होंने सती प्रथा और बाल विवाह का विरोध किया। दूसरी तरफ़ उन्होंने भारतीय महिलाओं को अपने देश की वीरांगनाओं एवम् महान स्त्रियों के चरित्र से प्रेरणा लेने की बात कही है । आधुनिक भारतीय स्त्री को पाश्चात्य स्त्रियों का अंधाधुंध अनुकरण न करने की सीख मिलती है जो आज की बालाओं के लिए आवश्यक है। परंतु पाश्चात्य देशों के विकास में सहायक कामकाजी महिलाओं के पक्षधर थे और भारतीय महिलाओं को भी घर की चारदीवारी से बाहर निकल काम करने के पक्षधर थे ।

मूलशब्दः पुनर्जागरण काल, महिला सशक्तीकरण, सुधारवादी आन्दोलन, स्त्री- पुरुष समानता, स्त्री-शिक्षा।

भूमिकाः-

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 फ़रवरी 1836 में कोलकता में हुआ। यह भारतीय पुनर्जागरण का काल था जब समाज सुधारवादी आन्दोलन अपने चरम पर था। परंतु विवेकानंद का प्रमुख कार्य समाज सुधार नहीं था बल्कि वे धर्म के एक नए रूप की खोज में थे। महिलाओं के संबंध में उनके विचार मानवतावाद व क्रांतिकारी दर्शन से जुड़े थे। "वे भारतीय स्त्री की पूर्ण आज़ादी के पक्ष में रहे।"[1]

भारतीय नारी के आदर्श रूप-

विवेकानंद शास्त्रों मे वर्णित नारी के आदर्श, गरीमा व मूल्यों को उच्च स्थान देते थे। "भारतीय नारी की जो शास्त्रीय मर्यादाएं प्राचीन काल में मनीषियों ने स्थापित की थी, स्वामी जी उनके समर्थक थे।"[2] परंतु वे पुरोहितों के- "नारी द्वार - नर्क का" जैसी विचारधारा के प्रखर

© 2025, SK Publisher All Rights Reserved

विरोधी थे। वैदिक काल उनके लिए आदर्श युग था जिसमें नारी स्वतंत्रत थी, उसे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। वेदों का ज्ञान प्राप्त करने व उपनयन का संस्कार प्राप्त था। सीता, शकुन्तला, मीराबाई, संघमित्रा को भारतीय नारी के लिए आदर्श मानते थे। स्वामी जी के अनुसार- "अमेरिका के लोग स्त्रियों की पूजा करने का दावा करते हैं किंतु वे केवल यौवन और सौन्दर्य की पूजा करते हैं। वे कभी झुर्रियों और पके बालों से प्यार नहीं करते।"[3] इसलिए भारतीय नारी को पाश्चात्य नारी के अनुसरण की आवश्यकता नहीं बल्कि प्राचीन धार्मिक आदर्शों से अपनी अलग पहचान बना सकती है। एक विद्वान से वार्तालाप के दौरान विवेकानंद ने कहा था- "हमारे संस्कृत नाटक पढ़कर देखो -शकुन्तला का उपख्यान पढ़ो और फिर देखो टेनिसोन के प्रिंसेस काव्य में हमारे लिए क्या कोई नई शिक्षा प्राप्त हो सकती है।"[4]

नारी स्वावलंबन के पक्षधर-

विवेकानंद का मानना था कि- "भारतीय नारी अपनी समस्याओं का हल करने में संसार में किसी भी भाग की महिलाओं से पीछे नहीं है।"[5] महिलाओं द्वारा अपने समस्याओं को स्वयं पहचानने व समाधान खोजने के पक्षधर विवेकानंद से एक बार किसी ने पूछा कि आप विधवा-समस्या को कैसे हल करेगे तो स्वामी जी चुप रहे। दूसरी बार भी चुप रहे। पर तीसरी बार जब प्रश्न कर्ता ने अपने प्रश्न को दोहराया तो स्वामी जी उस पर बरस पड़े - क्या मैं विधवा हूँ जो मुझे यह प्रश्न करते हो? वे स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझा लेंगी। उन्हें सोचने और करने की स्वतंत्रता दो उनके मार्ग की बाधाओं को दूर कर दो बाक़ी काम वे स्वयं कर लेगी।[6] केवल अपने निर्णय स्वयं करने की ही नहीं बल्कि आर्थिक स्वावलंबन भी नारी के लिए ज़रूरी है। विवेकानंद का मत था कि- "भारतीय नारी को योग्य, सक्षम और कामकाजी बनाना आवश्यक है। देश की संपन्नता इस बात पर निर्भर करती है कि स्त्री-पुरुष समान है। समान रूप से वे समाज व देश की प्रगति में सहभागी है व आर्थिक विकास में दोनों के उत्तरदायित्व समान है। पाश्चात्य देश यदि आर्थिक विकास में हमारे देश से आगे हैं तो निश्चय ही इसका कारण वहाँ की कामकाजी महिलाएँ हैं।"[7] स्वामी जी का कथन था कि पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना असंभव है।[8] स्वामी जी के इस कथन का अर्थ यह है कि समाज के विकास के लिए स्त्री और पुरुष रूपी दोनों पंखों की आवश्यकता है। उनका मानना था कि नारियों की उन्नति होने पर ही भारत का ठीक-ठीक जागरण होगा।

स्त्री-पुरुष लिंग-भेद के विरोधी-

स्वामी जी देश के पुनर्निर्माण हेतु स्त्री पुरुष की समानता को महत्वपूर्ण मानते हैं। स्त्री- पुरुष में लिंग भेद सर्वथा अनुचित है। एक शिष्य द्वारा देश में अनाचार फैलने का दोषी जब वो बौध मठो में भिक्षिणियों की अधिकता को बताया तो विवेकानंद ने कहा- "पता नहीं इस देश में नारियों और नरों में इतना भेदभाव क्यों किया जाता है, वेदांत तो यही सिखाता है कि सब में एक ही आत्मा का वास है। तुम लोग सदैव निंदा ही करते हो, किंतु कह सकते हो कि उनकी उन्नति के लिए अब तक तुमने क्या किया है? स्मृतियाँ रच कर तथा ग़ुलामी की कड़िया गढ़ कर पुरुष ने नारी को बच्चा जनने की मशीन बना कर रख छोड़ दिया।"[9] विवेकानंद कहते थे- "ये ईसा अपूर्ण थे क्योंकि जिन बातों में उनका विश्वास था, उन्हें वे अपने जीवन में नहीं उतार सके। उनकी अपूर्णता का सबसे बड़ा प्रमाण ये है कि उन्होंने नारियों को नरों के समकक्ष नहीं माना असल में उन्हे यहूदी संस्कार जकड़े हुए था, इसलिए वे किसी भी नारी को अपनी शिष्या नहीं बना सके। इस मामले में बुद्ध उनसे श्रेष्ठ थे, क्योंकि उन्होंने नारियों को भी भिक्षुणी होने का अधिकार दिया।"[10] परंतु उन्होंने बौध संघीय व्यवस्था की आलोचना भी की क्योंकि यहाँ

© 2024, SK Publisher All Rights Reserved

स्त्री को पुरुषों की अपेक्षा निम्न अधिकार दिया था, जहाँ मठ की भिक्षणियों को पुरुष मठ अध्यक्षों की अनुमति के बिना किसी महत्वपूर्ण कार्य में हाथ डालने की मनाही थी।

नारी सम्मान सर्वोपरि-

विवेकानन्द के अनुसार- "संसार की सभी जातियाँ नारियों का समुचित सम्मान करके ही महान हुई हैं। जो जातियां नारियों का सम्मान नहीं करना जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी और न आगे कर सकेगी।"[11]

स्त्री मुक्ति आन्दोलन के प्रेरक-

विवेकानन्द नारी को साक्षात् काली का स्वरूप मानते थे। उन्होंने अपने गुरु राम कृष्ण से सीख ली थी कि देश काल और परिस्थिति के अनुसार चलना चाहिए। वे मानते थे कि "मूलभूत सिद्धान्तों को देशकाल के अनुसार उचित परिवर्तन कर पुनः नए ढंग से आचरण में लाना चाहिए ।"[12] इस लिए विभिन्न देशों की नारी समाज का उनके अपने आदर्शों के आधार पर विचार करना चाहिए। पुरातन भारतीय समाज के उच्च चरित्र की सीता सरीखी महिलाएँ जो कि आधुनिक भारतीय समाज की महिलाओं की आदर्श होनी चाहिए। यह मानते हुए भी विवेकानन्द मानते थे कि- "महिलाओं की एक ऐसी पीढ़ी की ज़रूरत है जो अपने परिवार तक सीमित न रहकर देश और मानवता के लिए ब्रह्मचरणीयों के रूप में अपनी सेवा दे सके। स्त्रियों को ऐसे संगठन को वे पुरुषों के संगठन के अधीन रखने के पक्ष में नहीं थे।"[13] इन्ही क्रांतिकारी विचारों से संभवत आधुनिक नारी-मुक्ति मोर्चा आंदोलनों ने प्रेणणा ली।

स्त्री शिक्षा के समर्थक-

विवेकानंद स्त्री शिक्षा को उनकी समस्याओं का हल करने का मूल मन्त्र मानते थे। उनका मानना था बालविवाह, विधवा समस्या व अन्य सामाजिक समस्याओं का समाधान है, महिलाओं को शिक्षित करना। विवेकानंद का कथन था कि- "हम चाहते है कि भारत की नारियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्यों को वो भली-भांति निभा सके और संघमित्रा, लीला, मीराबाई, अहिल्या बाई आदि भारत की महान् देवियों द्वारा चलाई गई परम्परा को आगे बढ़ा सकें एवम वीर प्रसूता बन सके।"[14] शिक्षित स्त्री अपने उचित अनुचित और आपने भले बुरे का विश्लेषण स्वयं कर सकती है। वह बुरे कार्यों को स्वतः तिलांजलि दे देगी। महिलाओं के लिए गृह उपयोगी शिक्षा के अलावा आत्म रक्षा के लिए शारीरिक शिक्षा भी महिलाओं को दी जानी चाहिए। इसके अलावा उनका मानना था कि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से नारी के आत्मबल में वृद्धि होती है। स्वामी जी ने शिक्षकों को गाँव-गाँव जाकर बालक-बालिकाओं को ग्लोब व मानचित्र की जानकारी देने का सुझाव दिया। उन्होंने 6 अप्रैल 1897 को विदुषी महिला सरला घोषाल (रविन्द्र नाथ टैगोर की भानजी) को लिखा- "कि शिक्षा और सिर्फ शिक्षा ही इस देश की उन्नति कर सकती है। ज्ञान ही महिलाओं को व देश को अवनति से बचा सकता है, दुर्दशा से ऊपर उठा सकता है।"[15]

सती प्रथा के विरोधी-

स्वामी जी ने सती प्रथा जैसे अमानवीय कृत्य का डटकर विरोध किया। उनका कथन था कि- "विधवा को बलपूर्वक सती करवाने में किस प्रकार का सतीत्व का विकास दिखाई पड़ता है? कुसंस्कारों की शिक्षा देकर लोगों से पुण्य कर्म क्यों करवाते हो? मैं कहता हूँ- मुक्त करो, जहाँ तक हो सके लोगों के बन्धन खोल दिए जाएं।"[16]

© 2024, SK Publisher All Rights Reserved

बाल विवाह का विरोध-

ब्रिटिश कालीन दौर में बंगाल में ही नहीं वरन पूरे देश में दस ग्यारा वर्ष की कन्या का विवाह कर दिया जाता था। अंग्रेज़ी सरकार ने क़ानून बनाकर 12 वर्ष से कम आयु के विवाह को दंडनीय अपराध धोषित किया। तब भारत के पोंगा- पंडित ने इसका विरोध किया और कहा कि धर्म भ्रष्ट हो गया। तब स्वामी जी ने सुझाव दिया कि कन्याओं को शिक्षित किया जाए ताकि इस कुप्रथा से स्त्री ख़ुद निबट सके।

निष्कर्ष:-

हालाँकि कुछ आधुनिक विद्वान उनके विधवाओं को संपत्ति के हक़ व भारत को "हिजड़ो व महिलाओं" का देश कहे जाने जैसे विचारो पर प्रश्न उठाते हैं। परन्तु इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता कि विवेकानंद ने महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा और पितृ-सत्तात्मक समाज में पुरुषों से महिला की आज़ादी की बात कही जो आधुनिक काल में नारी मुक्ति आंदोलनों के लिए प्रेरक है। उन्होंने प्राचीन महिलाओं के उच्च आदर्श की बात कहकर भारतीय स्त्री-विमर्श को नवीन आयाम दिया तथा स्त्री शिक्षा को सर्वप्रथम आवश्यकता माना जिसके महत्व से आज सभी परिचित हैं।

संदर्भ सूची

1. के. एम. मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ- 41
2. सोमनाथ शुक्ल, बीसवी शदी के राजनीतिक विचारक, आशीष प्रकाशन, कानपुर, 2003, पृष्ठ- 206
3. विवेकानंद साहित्य, दशम खंड, अदेत आश्रम, कोलकाता, 1985, पृष्ठ- 265
4. स्वामी ब्रह्म स्थानंद, (संपादक), स्वामी विवेकानंद जी से वार्तालाप, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2005, पृष्ठ- 68
5. वही, पृष्ठ- 67
6. मनोज कुमार सिंह एवम शैलेश कुमार, भारतीय राजनीति: स्वामी विवेकानंद, डिस्कवरी पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ- 29
7. वी. एन. सिंह एवम जनमेजय सिंह, नारीवाद, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- 91
8. त्रिलोकीनाथ सिन्हा, विश्व वंध विवेकानन्द, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ- 110
9. मनोज कुमार सिंह, शैलेश कुमार एवम स्वामी चौधरी, भारतीय राजनीति: स्वामी विवेकानंद, डिस्कवरी पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ- 12
10. वही, पृष्ठ- 29
11. वही, पृष्ठ- 13
12. विवेकानंद, भारतीय नारी, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2013, पृष्ठ-14
13. के. एम. मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ- 32
14. वही, पृष्ठ- 69
15. सिस्टर निवेदिता, प्रवर्जिका आत्मप्राण, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2001, पृष्ठ- 32
16. वी. एन. सिंह एवम जनमेजय सिंह, नारीवाद, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- 91

::: Cite this article :::

डॉ. किरन सरोहा. (2025). स्वामी विवेकानंद की महिलाओं के प्रति विचारधारा. SK INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH HUB, 12(9), 67–70. https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i9.6

© 2024, SK Publisher All Rights Reserved